जन शासन का एक प्रयोग

हरिद्वार में एक समय एक आंदोलन चला था, जिसकी शुरूआत और सफलताओं के स्वरूप को देखकर कहा जा सकता है कि मानव आंदोलन भी प्रकृति की तरह ही एक गति प्रदान करने के बाद, स्वतः चलते और विकास करते रह सकते हैं और अगर यह शिथिल हुआ, तो स्वतः ही उसके अंदर से एक या अनेक अन्य गतिवान शक्तियों का उदय होगा।

उक्त आंदोलन का प्रारंभ दैनिक में प्रकाशित एक लेख से हुआ था। भारत के नेताओं को उपदेश देने की बीमारी है। जो पराक्रम नहीं कर पाते, वे उपदेश देने का धंधा करते हैं। अतः जनता का अपना एक ऐसा मंच होना चाहिए, जिस पर नेताओं और अधिकारियों को बुलाकर पूछा जा सके कि वे स्वयं क्या करते हैं।

इस लेख की व्यापक प्रतिक्रिया हुई। ऐसे मंच की आवश्यकता पर पत्र व सुझाव आये। मंच के लिए 'जन परिषद' नाम दिया गया। प्राप्त हुये सब पत्र और सुझाव इसी शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित किये जाने लगे। एक सुझाव आया कि जिन लोगों ने जन परिषद में दिलचस्पी दिखायी है, उन्हें एक जगह इकट्ठा होकर परस्पर विचार-विमर्श करना चाहिए।

कुछ लोगों ने जन परिषद को एक पार्टी मानकर पार्टी की कमेटी सदस्यता शुल्क निर्धारित करने पर जोर दिया। परन्तु बहुमत यह मानकर कार्य करने के पक्ष में था कि हरिद्वार की सारी जनता इसकी सदस्य है। सदस्यता शुल्क का भी प्रश्न पैदा नहीं होगा। किसी समिति, पदाधिकारी, कार्यालय, झंडे, नियमावली की भी आवश्यकता नहीं समझी गयी। एकमात्र उद्देश्य जनजागृति रखा गया। जिले के अधिकारियों, विधायकों और मंत्रियों को जो पत्र भेजे गये, उनमें जन परिषद के उद्देश्यों की व्याख्या इस प्रकार की गयी :

'जन परिषद' सामाजिक कुरीतियों, जनजीवन में व्याप्त पाखंड और भ्रष्टाचार, जाति पंथ तथा भाषा के आधार पर उत्पन्न विघटनकारी शक्तियों के विरूद्ध युद्ध का एक मंच है, कोई राजनीतिक पार्टी या सांस्कृतिक दल नहीं। सारी जनता इसकी निःशुल्क सदस्य है। जन परिषद का उद्देश्य साहसपूर्ण अपनी कारगुजारी का माहौल एवं जनजागृति पैदा करना है। जनता से वेतन पाने वाले शासकों और वोट पाने वाले विधायकों के कार्यकलाप पर निगरानी रखना है।

पत्र में स्पष्ट रूप से लिखा गया कि वे जन परिषद के मंच पर आकर यह बतायें कि पद ग्रहण करने के बाद से उन्होंने पद के अधिकारों और कर्तव्यों के अनुसार अपने गांव, क्षेत्र, समाज, नगर, प्रदेश या देश के लिए आज तक कौन-सा काम किया है? एक माह के अंदर पत्र का उत्तर मांग कर पूछा गया कि उन्हें किस समय व किस दिन जन परिषद के मंच पर आने की सुविधा होगी। पत्र का मसौदा जिनको भेजा गया, उनकी सूची अखबार में प्रकाशित कर दी गयी। अखबार की प्रति भी उन्हें भेज दी गयी, ताकि उन्हें मालूम हो जाये कि हरिद्वार की जनता को पता है कि उन्हें पत्र भेजा गया है।

कुछ दिनों बाद उत्तर आने शुरू हुए। अनेक मंत्री, विधायक, अधिकारी जन परिषद के मंच पर आये। नियमित रूप से साप्ताहिक विचार-विमर्श होने लगा। उसमें जो निश्चय होता, वह अखबार में छप जाता। बहुत से लोग उन बातों पर अमल करने लगे। विचार-विमर्श में निश्चय हुआ कि जनता को हर बात के लिए सरकार पर भरोसा न कर स्वयं भी कुछ करना चाहिए। अपने मुहल्ले की सफाई करना निर्धारित किया गया। सहयोग देने वालों को 'कर्मवीर' नाम देने का सुझाव आया। चार मुहल्लों में कर्मवीरों ने काम करना शुरू कर दिया। उनकी रिपोर्ट भी अखबार में छपने लगी।

विचार-विमर्श में निश्चय हुआ कि जनता में स्वालम्बन का मुद्दा पैदा करने के लिए प्रचार कार्य होना चाहिए। कुछ नागरिकों ने लाउडस्पीकरों द्वारा यह कार्य शुरू कर दिया। लाउडस्पीकर व्यापारी स्वतः ही बिना शुल्क के इस कार्य में सहयोग करने लगे।

तीसरे विचार-विमर्श में निश्चय हुआ कि पीड़ितों की शिकायतों की ओर अधिकारियों का ध्यान दिलाने वाला कोई नहीं है। जनता इधर-उधर मारी-मारी फिरती है। जनता का दुखड़ा सुनने के लिए हरिद्वार के सभी समाचार पत्रों के संपादकों, कतिपय डॉक्टरों, वकीलों और व्यापारियों के सहयोग से एक जन आयोग का गठन किया गया, जिसकी बैठक प्रति सप्ताह एक निश्चित स्थान पर निश्चित समय और दिन होने लगी।